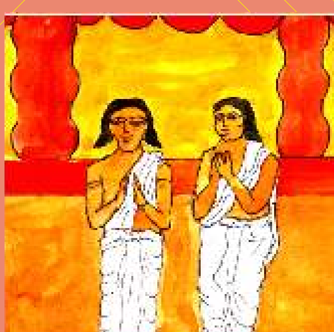










मैथिली चित्रकथा

ihfr Bkdj

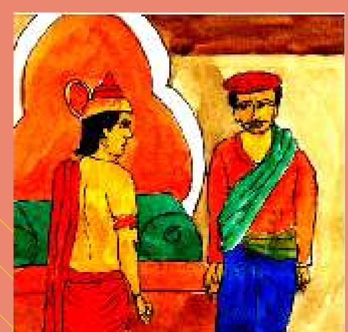












क्रम

1st Edition 2009 of Maithili Chitrakatha (Maithili Language)
by Preety Thakur narrated by Gajendra Thakur
and Published by Shruti Publication,
8/21, Ground Floor, New Rajendra Nagar, New Delhi-110008
Tel.: 011-25889656, 25889658 | Fax: 011-25889657

ISBN: 978-93-80538-13-6

Price: Rs. 100/- (INR)-for individual buyers
US $ 80 for libraries/institutions (India & abroad)

Jfr idk'ku
jftLVM vkfiQl% 8@21 Hkry] U; jktUn uxj] ub fnYyh&110008
njHkk"k% 011&25889656&58 iQDl% 011&25889657
website://www.shruti-publication.com
email: shruti.publication@shruti-publication.com

Printed by Ajay Arts, Delhi-110002

Distributor:
Ajay Arts, 4393/4A, 1st Floor, Ansari Road, Darya Ganj,
New Delhi 110 002 (INDIA) Tel. : 011-23288341, 09968170107

Bihar & Nepal: Dr. Umesh Mandal Mob: 09931654742

मोती दाइ

गाम उजैनी। गहिल माताक भगतिन मोती दाइ। मोती दाइ जातिक रजक।



एक दिनक गप, बाड़ीमे गोबर पाथि रहल छलीह मोती दाइ।



गुअरटोलीक जनानी सभ हुनका देखि कऽ बाजल.....



मोती दाइ दु:खसँ भरि गेलीह। गहिल माताक गहमर गेलीह, पीड़ी खोदऽ लगलीह।



गहिल माता प्रगट भेलीह। मोती दाइ बच्चा माँगलन्हि।



इन्द्रक दरबार। गहिल माता अपन भगतिन लेल बच्चा माँगलन्हि । इन्द्र हिसाब लगेलन्हि।



गहिल माता घुरलीह मुदा एम्हर मोती दाइ चिता सजेलन्हि, मरबाले तैयार।



गहिल माता फेर इन्द्र लग गेलीह ।



सएह भेल। मोती दाइकेँ बच्चा भेलै।



मुदा ओ छठियारी दिन मरि गेलैक ।



मुदा बाँझ होएबाक दु:ख खतम भेलै मोती दाइक। गहिल माताक भगता ओ खेलाए लगलीह।



राजा सलहेस

राजा सलहेस दूधवंशी जातिक छलाह, जमीन्दार नौरंगी बहादुर थापाक अहिठाम काज करैत छलाह।

दबना, राजाक मालिन, ओकरासँ प्रेम करैत छलि।



नौरंगी बहादुर थापाकेँ क्यो सलहेसक विरूद्ध कान भरि देलकन्हि।



आ सलहेस बनि गेलाह राजाक महलक पहरेदारक सरदार।



आब सलहेस सेहो प्रेम करए लागल दवनासँ। मुदा चूहड़मल षडयंत्र केलक।



रानीक महलसँ नौलखा हार चोरा लेलक।



आ सलहेसक घरमे राखि आएल। राजा पुछाड़ी करबेलन्हि। चूहड़मल कान भरलक। सलहेसक घरक तलाशीक आदेश भेल।



सलहेसकेँ पकड़ि लेल गेल।

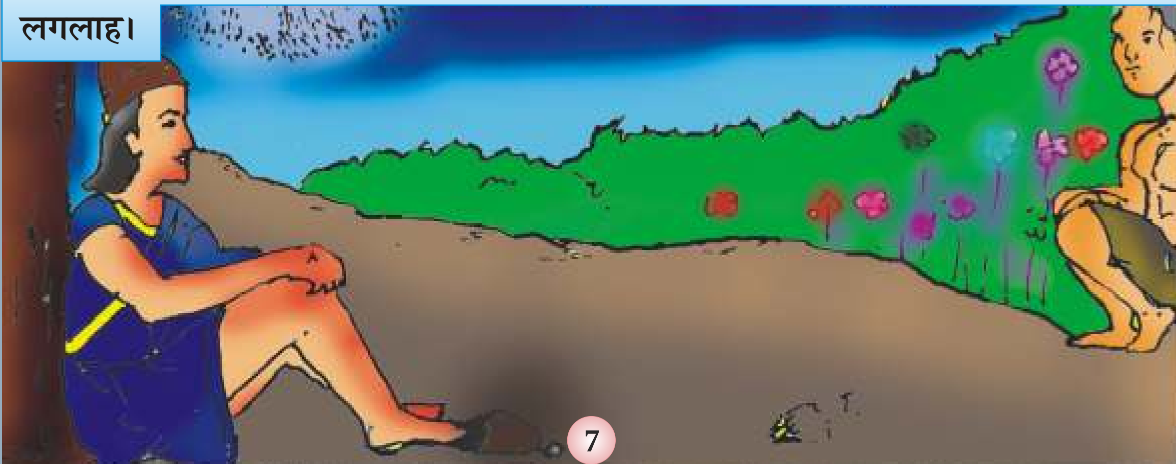


दवना तन्त्र विद्या करत।

चूहड़मल खून बोकड़ैत दवनाक पएरपर खसल



राजा सलहेस फेरसँ बहाल भऽ गेलाह। दवना आ सलहेस विवाहित भऽ खुशीसँ रहए लगलाह।



बोधि-कायस्थ

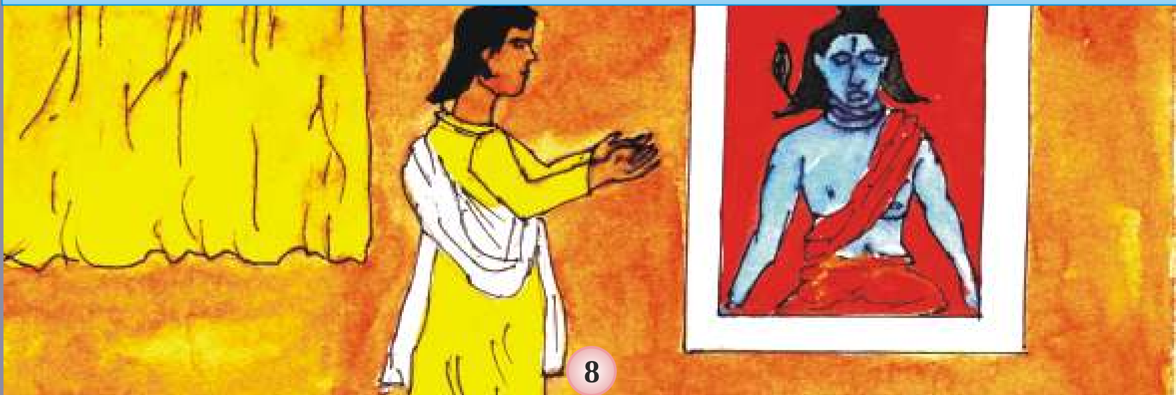
मिथिला राजदरबारमे बोधि कायस्थ। बड्ड सज्जन। नञि मोनसँ, वचनसँ आ नहिये कर्मसँ ककरो अहित कएने छलाह।



दान-दक्षिणा से खूब दैत छलाह।



भोलाबाबाक बड़का पुजेगरी छलाह बोधि कायस्थ।



फेर आस्ते-आस्ते ओ वृद्ध भेलाह आ एक दिन बिछौनपर करोट लैत हुनका विचार अएलन्हि-



बिदा भेलाह बोधि कायस्थ। घरबार छोड़ि गंगा मैयाक शरणमे।



गंगा मैया आधकोस दूर रहथिन तखने बोधि कायस्थ ठाढ़ भऽ गेलाह आ गंगा मैयासँ कहलखिन्ह....



गंगा ई सुनि बिदा भेलीह अपन भक्त लग। बोन-झाँखुरकेँ तड़पैत बोधि लग पहुँचि गेलीह। बोधिकेँ पवित्र कऽ अपनामे समेटि लेलन्हि। स्वर्ग गेलाह बोधि।



विद्यापति ई कथा पुरूषपरीक्षामे लिखलन्हि आ बादमे विद्यापतिक गंगालाभ सेहो अही तरहेँ भेलन्हि।

बहुरा गोढ़िन नटुआ दयाल

बहुरा गोढ़िन बेगूसराय लग बखरीक रहैबाली आ दुलरा दयाल भरौड़क राजकुमार। दुनू गोटे तंत्रक साधक आ नृत्यमे पटु। पतिक बलि दऽ कऽ तंत्र सिखने छलि बहुरा। से लोक दुलरा दयालकेँ नटुआ दयाल कहए लगलाह।



नटुआ दयाल एहि क्रममे बहुरा गोढ़िन लग जाए लागल आ ओकर पुत्री फूलमतीसँ प्रेम करए लागल। विवाहक प्रस्ताव राखलक नटुआ दयाल आ से मानए पड़लै बहुराकेँ।



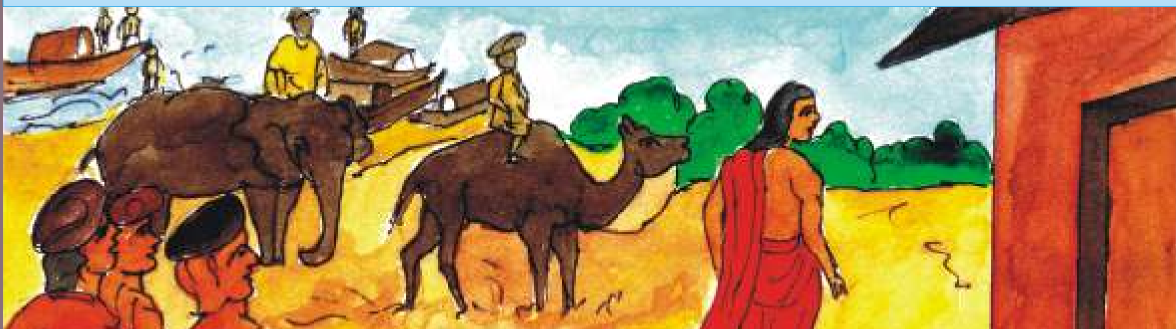
नटुआ दयालक गुरू मंगल कमला कातमे रहैत छलाह। हुनकासँ आशीर्वाद लेलक नटुआ दयाल।



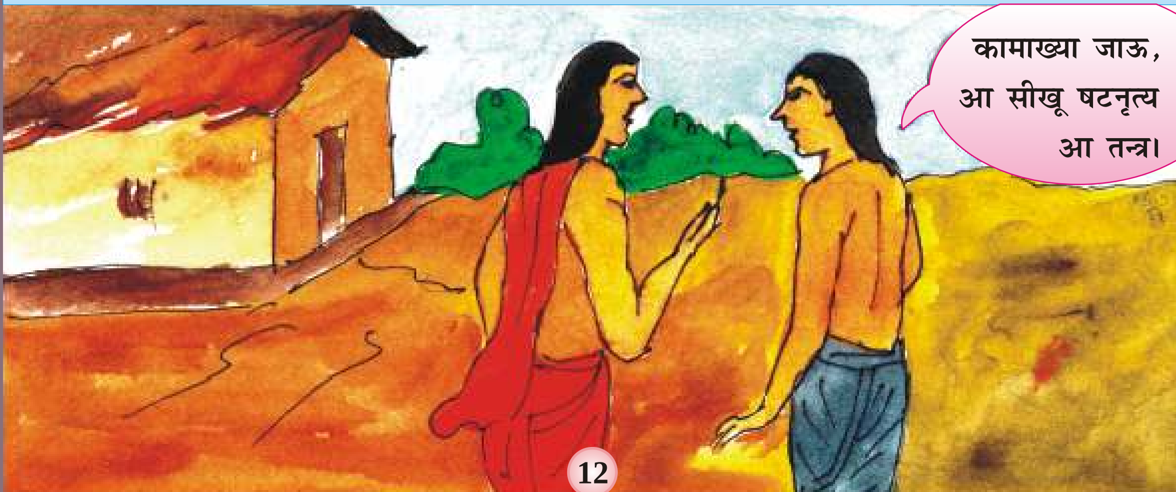
आ बिदा भेल बियाह करबाक लेल।



पाछाँसँ जे बरियाती सभ अएलैक तकर झगड़ा घरबारीसँ भऽ गेलै। आब लिअ। नटुआ दयालक मंत्री मल्लक एक आँखिक रोशनी निकालि लेलक बहुरा। बराती सभकेँ बकड़ी बना कऽ घरमे कोंचि देलक बहुरा।



घुरि कऽ गुरू मंगल लग गेलाह नटुआ दयाल। सभ गप सुनेलन्हि।



कामाख्याक चंडिका मन्दिरक नर्तकी योगिनीसँ सिखलक तन्त्र।



सरैया गामक सिद्धदेवी वागेश्वरीकेँ नरबलि देल जाइ छलै आ ओतए नाचै छली भुवनमोहिनी। अनहद आ आज्ञाचक्र नृत्य तँ सिखबे केलक नटुआ दयाल, कारी जादू काटैक मंत्र सेहो सीखि लेलक।



कमला-बलानक धारमे उतरि गेल नटुआ दयाल। मुदा बहुरा सेहो नट्टिन, अपन षट्चक्रसँ सुखा देलक धारक पानिकेँ।



लोक सभ राजा लग गेलाह। सभटा गप सुनेलन्हि।



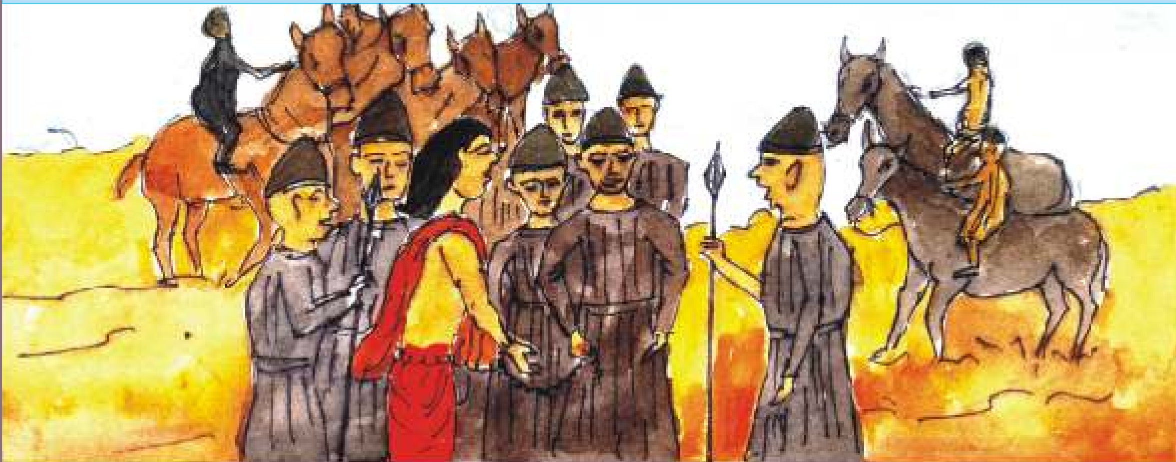
यज्ञ शुरू भेल।



आ ओम्हर सिपाही सभ बहुरा लग पहुँचल आ ओकरा पकड़ि कऽ राजा लग आनलक।



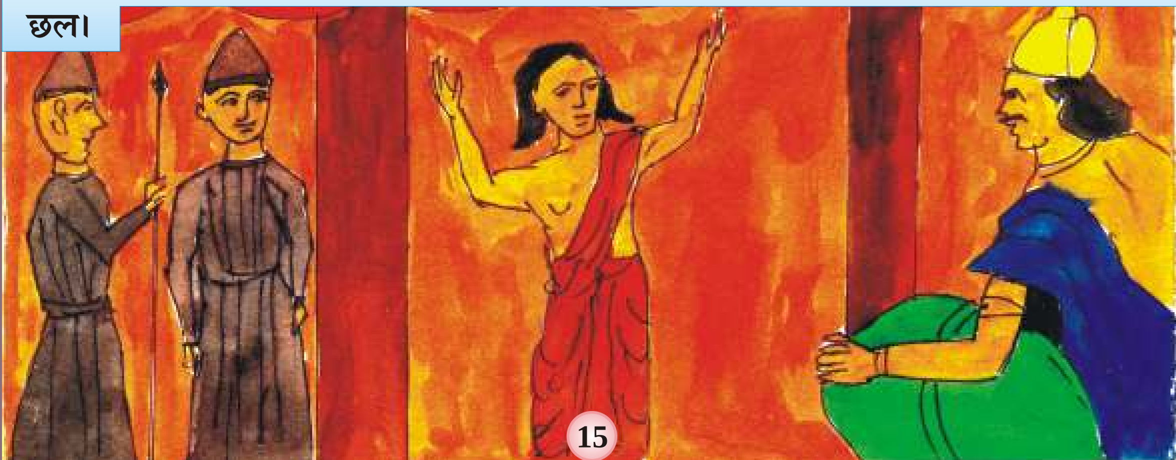
राजाक आदेशसँ सिपाही सभ दुलरा दयालकेँ ताकि कऽ पकड़ि लेलक।



राजाक सोझाँ आनल गेल नटुआ दयाल।



आ उपाए कएलक नटुआ दयाल। अपन नृत्यसँ जे कामाख्यासँ सीखि कऽ ओ आएल छल।

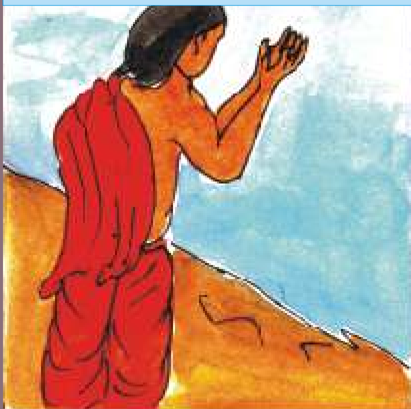


बहुरा धन्य भऽ गेली।



कमलाधारक पूजा केलक नटुआ दयाल।

मुदा बहुरासँ विद्रोह कऽ देलक बहुराक किछु चेला आ मारि देलक चक्कू नटुआ दयालकेँ।





मुदा कामाख्याक योगिनी जिया देलक नटुआ दयालकेँ आ शुरू कऽ देलक खतम केनाइ बहुराक विद्रोही शिष्य सभकेँ।

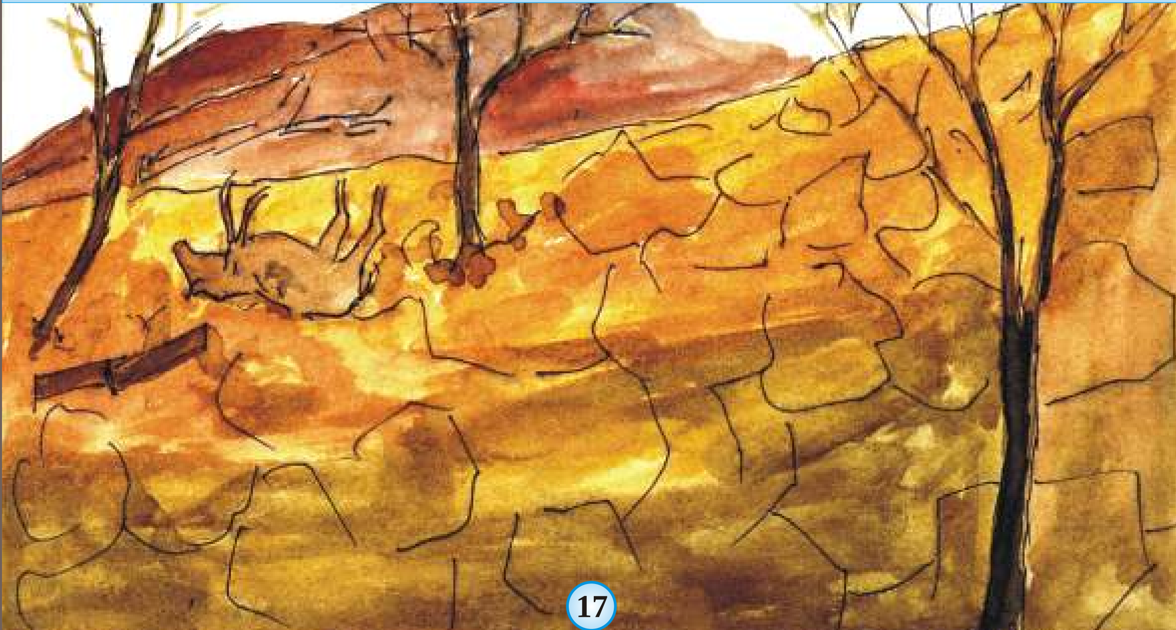


अमता घरेन

मिथिलामे राजा माधव सिंहक राज्यमे सभ ठाम हरियरी पसरल रहैत छल।



मुदा भयंकर रौदी भेल। सभटा हरियरी खतम।



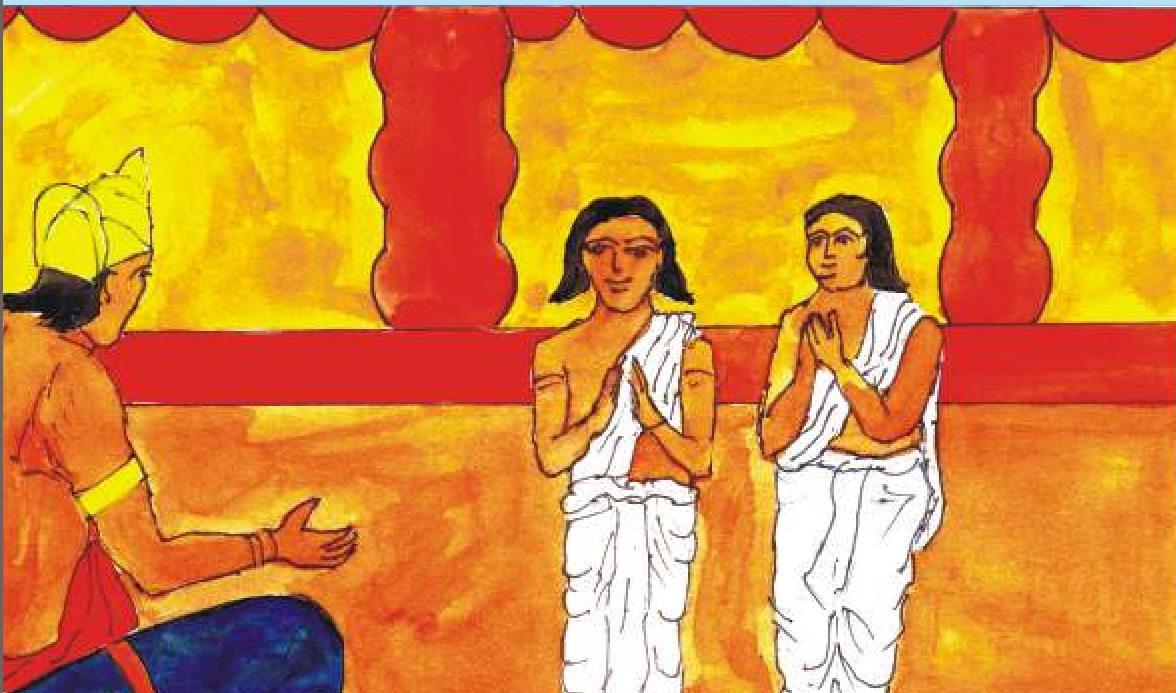
राजा यज्ञ करबेलन्हि, मुदा कोनो फाएदा नहि।



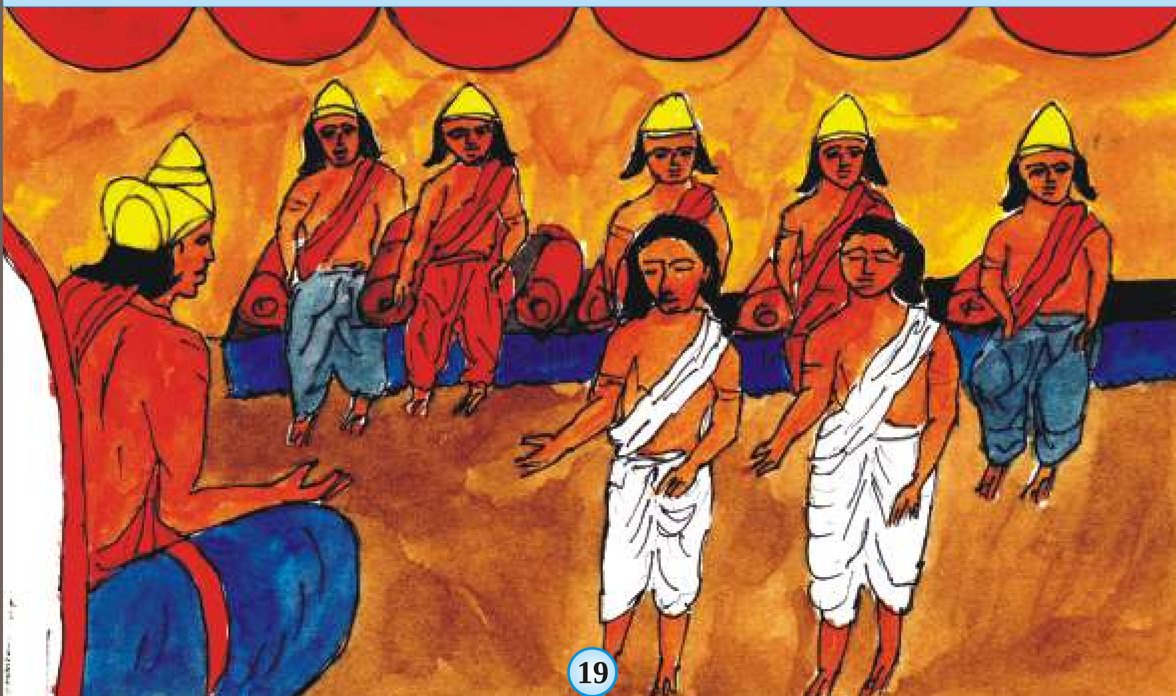
राजा बड्ड दुखी रहथि। मुदा तखने एकटा दरबारी कहलकन्हि-



माधव सिंहक अनुरोधपर नेपाल नरेश राधाकृष्ण आ करतारामकेँ पठा देलखिन्ह।



भीम मल्लिकक पखाबजक थापपर राधाकृष्ण आ करताराम राग मेघ मल्हार शुरू केलन्हि।



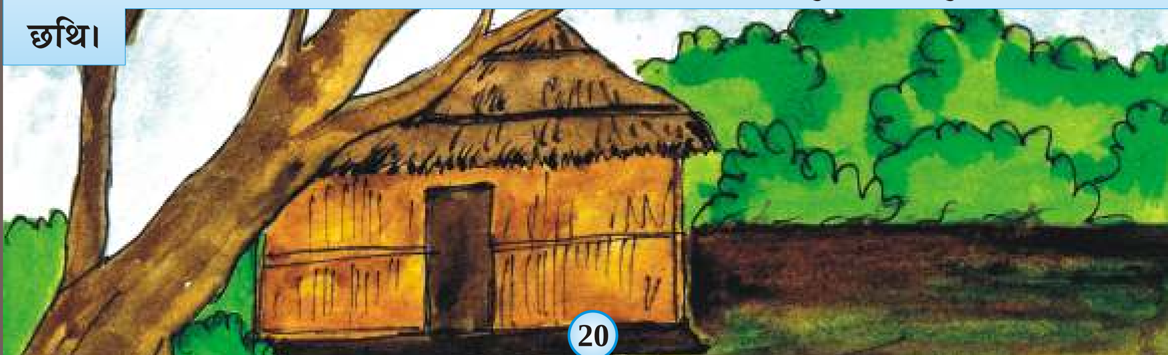
आ एम्हर बरखा जे शुरू भेल से खतम होएबाक नामे नञि लैत छल।



लागल जे आब जल-प्रलय आबि जाएत।



बोन लग राजा खीरीक गाछ लगबा कऽ अमता गाम बनेलन्हि आ राधाकृष्ण करतारामकेँ दऽ देलन्हि। ओतहि ओ सभ कुटी बना कऽ संगीत साधना करए लगलाह आ हुनकर वंशज संगीतक अमता घरेनक नामसँ प्रसिद्ध भेल जाहिमे आजुक रामचतुर मल्लिक सेहो छथि।



दीना–भदरी

नेपालक मिथिलांचलमे अछि जोगियानगर जतए रहै छला दू भाइ–दीना आ भदरी। मुसहर जातिक रहथि आ पाँच–पाँच मोनक कोदारिसँ बिगहा भरि खेत दिन भरिमे तामि लैत छलाह। बड्ड नीक खेती करथि।



जोगियानगरक बगलमे जाँजर गाम छल। ओतुक्का जमीन्दार छल कनक सिंह आ ओकर पत्नी रहए बुधनी। बड़ बदमाश दुनु गोटे। बोनिहारकेँ देखए नहि चाहए।



कनकसिंहकेँ दीना–भदरीक विषएमे पता चललै। ओ जोगियानगर गेल आ दीना–भदरीसँ कहलक.......



दीना-भदरीकेँ कनक सिंहक बोनिहारसँ कएल जा रहल अत्याचार बुझल रहै। मारि-मारि कऽ छुटलाह दुनू गोटे कनक सिंहपर। भागल कनक सिंह।



बुधनीकेँ पता चललै।

ओ सलहेस थान गेल। कठोर तपस्या केलक।



सलहेस प्रकट भेलाह......



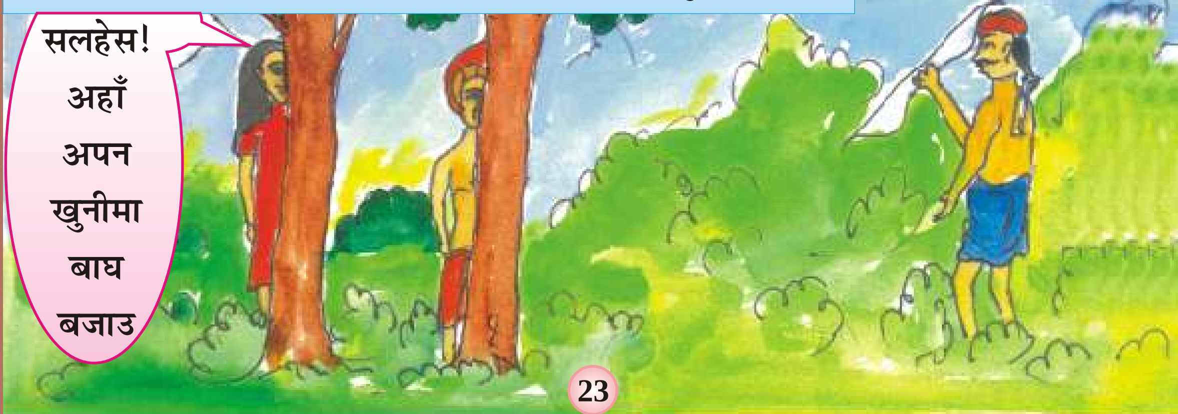
सलहेस वचनक हारल की करताह? रातिमे दीना-भदरीकें सपना देलन्हि सलहेस।



रातिएमे बिदा भेलाह दुनू गोटे, तीर-धनुष लेने। संगमे मामा बहुरन। रस्तामे नंगड़ागोड़िया गाम, ओतए दोस जीतन यादवकें सेहो नोति पहुँचलाह कटैया बोन।



अमावस्याक राति, अन्हार गुज्ज। मुदा शिकार एकोटा नहि। बादुर घुमैत। दीना एसगरे जंगलक बीचमे चलि गेलाह। ओतए सलहेसक संग बुधनी ठाढ़ि।



बुधनीक कहलापर सलहेस अपन खुनीमा बाघ बजेलन्हि। दीना बाण चलेलन्हि मुदा बाण रस्ता बिसरि गेल ।



फेर मल्लयुद्ध भेल आ दीना बाघकेँ मारि देलन्हि।



मुदा फेर बुधनीक कहलापर बाघिनकेँ बजेलन्हि सलहेस। ओ बगरा बनि आएलि। अपन बिखाह चांगुरसँ पहिने दीनाकेँ, फेर ओकरा ताकए आएल भदरीकेँ मारि देलक।



दीना आ भदरीक आत्मा दू गोटेक शरीरमे पैसि गेल।



भेष बदलि दुनू पहुँचल माए निरसो लग।



मुदा निरसो लग पाइ नहि। दीना-भदरी ओकरा सपना देलन्हि।



सएह केलन्हि निरसो। ततेक समान बनीमा दऽ देलकन्हि जे जेवार केलन्हि निरसो।

बारिक बनि दीना-भदरी सभकेँ पड़सि कऽ खुएलन्हि । तखने दीनाकेँ असली रूपमे पत्नी हंसा देखलन्हि।

निरसोकेँ हंसा ई गप्प कहलन्हि-मुदा ओ किएक मानतीह.......



सएह केलन्हि निरसो । दूध बहि दीना-भदरीक मुँहमे गेल आ दुनू गोटे बिला गेलाह।



फेर बिदा भेलाह दीना भदरी मोरंगा। जोरावर सिंह, ताहिर आ सुनरिया लगा कऽ डेढ़ सए दुष्टक नाश केलन्हि। फेर धारक कातमे मारलन्हि बुधनीकेँ।



फेर सलहेस अएलाह आ कहलन्हि......



सलहेस आ दीना-भदरीक गहमर संगे-संग रहए लागल। फेर दीना-भदरीकेँ मुक्ति भेटि गेलन्हि। परलोकमे सलहेस आ दीना-भदरी संगे-संगे रहए लगलाह।

जालिम सिंह

बेतिया राज। वीर जालिम सिंह। राजपूत जातिक, राजाक सिपहसालार। कतौ जाइत रहथि आकि पियास लगलन्हि।



ओहिमे एकटा छलीह मूँगा। जातिक दुसाध।



मूँगा पानिक बासन जालिमक हाथमे दऽ घर चल अएलीह।



फेर शुरू भेल प्रेमकथा मूँगा आ जालिम सिंहक।



मुदा पृथ्वीपाल सिंह, जे राजाक चमचा छल, ओकरा ई पसिन्न नहि। से एक दिन जखन मूँगा आ जालिमक भेँट भऽ रहल छल, ओ आक्रमण करबा देलक।



मुदा जालिमसँ डरि सभ भागि गेलाह। जालिमक संगी पटटू मलाह सभ आक्रमणकारीक पता लगा कऽ मारि देलन्हि।



बेतिया राजाक दरबारमे पृथ्वीपाल सिंह जालिमक विरूद्ध अरजी लगेलक।



दरबारमे आएल जालिम।



राजा छोड़ि देलन्हि जालिमकेँ। पट्टू मलाहसँ भेँट केलन्हि जालिम। विचार भेलन्हि जे मौनी बाबासँ विचारी।



पट्टू, जालिम आ मौनी बाबामे भेँट भेल।



पट्टूक हाथेँ पृथ्वीपाल मारल गेल तँ एम्हर मूँगाक जीनाइ मुश्किल भऽ गेल।



मुदा ई खबरि जालिमकेँ भेटलैक तँ ओ पहुँचि गेल मूँगाक घर। पुछलक मूँगाक पता तँ मूँगाक भौजी डरक द्वारे पता बता देलक।



कनुआक ठेकानापर पहुँचल जालिम। मूँगाक आइ बलि देमए बला छल कनुआ। युद्ध भेल। कनुआ आ ओकर महीसकेँ मारि देलक जालिम।



माताक मन्दिरमे बियाह भेल। मूँगा आ जालिमक बियाह।



मूँगाकेँ लऽ घर बिदा भेल जालिम सिंह।



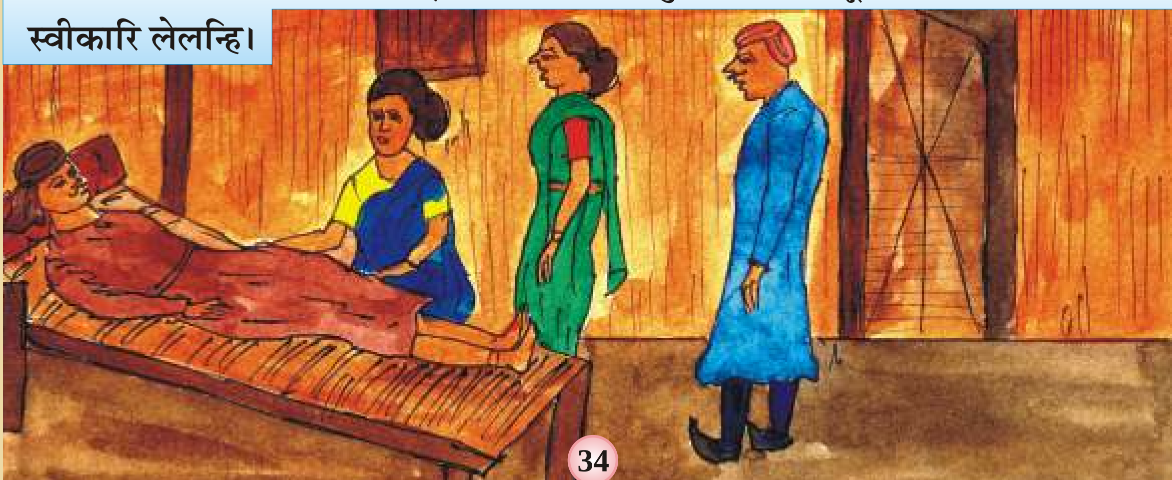
पहिने जालिम कहि देलन्हि जे क्षत्राणी अछि मूँगा। मुदा जखन हुनकर भाए सभकेँ पता चललन्हि तँ मारि बजड़ल। घाएल भऽ गेलाह जालिम।



घाएल पतिकेँ घोड़ापर लऽ बिदा भेलीह मूँगा।



वैद्यक घरमे उपचार भेल। भाए सभक आँखि खुजलन्हि आ मूँगा-जालिमकेँ ओ सभ स्वीकारि लेलन्हि।



नैका बनिजारा



शोभानायक एकटा वणिक रहथि, तिरहुतमे बारी नाम्ना स्त्रीसँ हुनकर बियाह भेल छलन्हि। बियाहक बाद बिध भेल आ शोभानायक मोरंग बिदा भऽ गेलाह। मुदा रस्तामे डकहरक ई गप सुनलापर जे ओहि राति जे पत्नीक संग रहत तकरा चन्सगर पुत्रक प्राप्ति होएतैक, ओ घुरि कऽ पत्नी लग आबि गेलाह।

फेर अपन भाए चतुरगनक संग ओ घरक पछुआरमे नाहसँ बिदा भऽ गेलाह मोरंग। बारी तकैत रहलि।



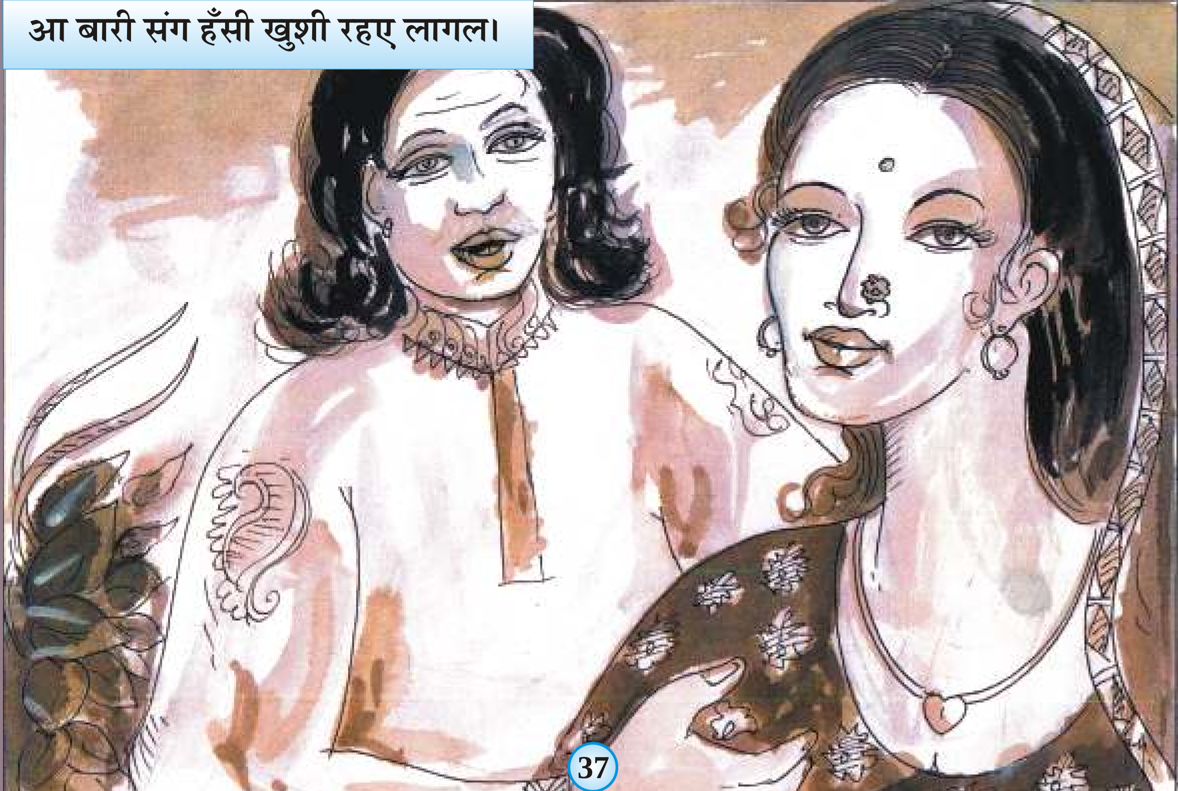
शोभानायक पत्नी-बच्चाक भविष्य लेल बाबा सभ लग जाइत रहल।





एम्हर बारीपर आरोप लागल। बच्चा पेटेमे रहै तँ सासु-ससुर ओकरा घरसँ निकालि देलन्हि। पंचैती भेल। बारी चतुरगण लग चलि गेलि।


मुदा मोरंगसँ कए बेर घुरए चाहलक नैका मुदा कखनो प्रकृति संग नञि देलकै, तँ कखनो किछ आर कारणसँ, बारह बरख बीति गेलै। तेरहम बरख शोभानायक घुरि आएल।


आ बारी संग हँसी खुशी रहए लागल।

रघुनी मरड़

गौपालक रघुनी भगवतीक भक्त। ओकरा दूटा भाए, देवदत्त आ काशीराम मरड़। पड़ल अकाल। आ रघुनी आबि गेलाह सहरसा लग बनमां लग, बरहमपुर गाम। ओतुक्का जमीन्दार रहथि युगल प्रसाद। दुखड़ा सुनेलन्हि रघुनी हुनका।

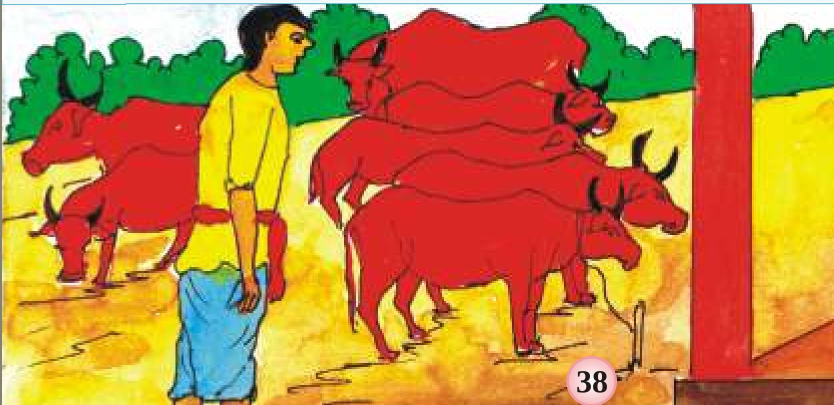
रघुनी। अहाँकेँ दंगल जितलापर हम कहनहिये रही जे कोनो बेगरता होए तँ कहब। अहाँकेँ सवा सए बीघा जमीन दऽ रहल छी। खूब मोनसँ खेती करू। बचत होएत तँ मालगुजारी ओहीसँ दिअ।



मोनसँ खेती करऽ लगलाह रघुनी।



बड़का बखारी बना लेलन्हि। सहस्र गाए भऽ गेलन्हि। सुगमा गाममे गौशाला बना रहऽ लगलाह। मुदा युगल प्रसादक घरमे बखड़ा भेलन्हि, हुनकर सम्पति गागोरीक राजा कीनि लेलक।



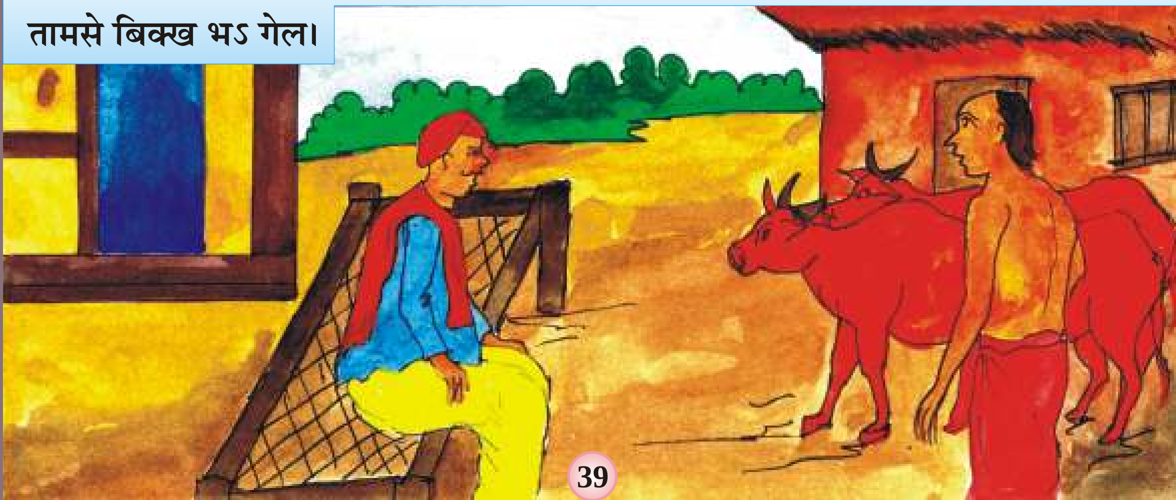
रघुनी गाए चरबैत छलाह सुगमा गाममे।



रघुनी गेलाह सिमरी। चौघरी संग बैसि नटुआक नाच देखलन्हि। चौधरी ओकरा औंठी आ चादरि देलन्हि।



रघुनी चलि गेल। नटुआ जोड़ा गाए लऽ चौधरी लग आएल। चौधरी मोने-मोन रघुनीपर तामसे बिक्ख भऽ गेल।



चौधरी जोगी मकदूमसँ भेँट केलक।



एकटंगा आराधनाक आठम दिन शुरू भेल।



योगी देवी चण्डिका प्रगट भेलीह।



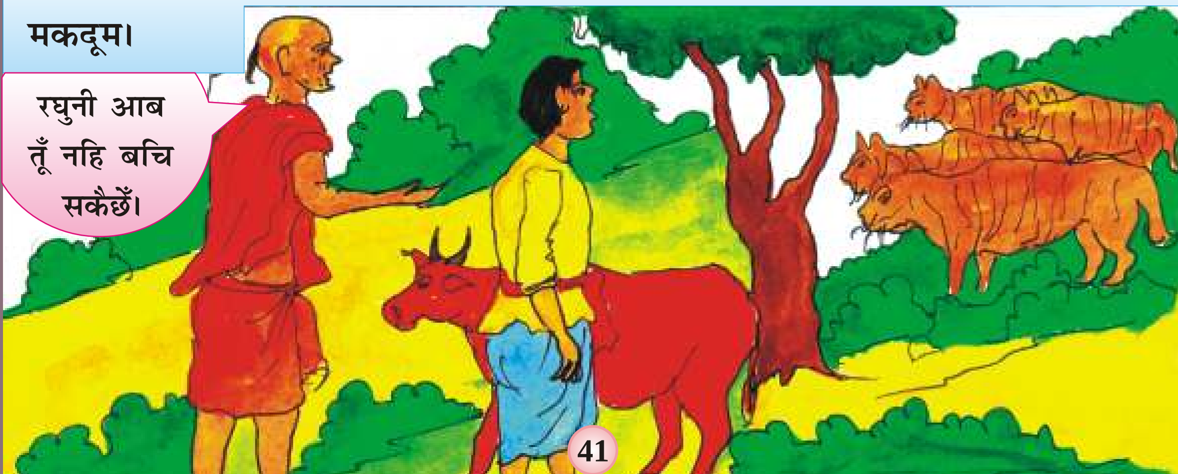
एम्हर रघुनीकेँ आकाशमे अबाज सुनबामे अएलैक।



रघुनी पीपड़क पात तोड़लन्हि। ओहिमे सँ दूधक बदला खून निकलल।



तखने सात सए बाघ बाघिन रघुनीक सोझाँ आबि गेल। आ रघुनीक पाछूमे जोगी जादूगर मकदूम।



बाघ रघुनीकेँ मारि देलक।



मुदा तखने भेल चमत्कार। रघुनी उठि कऽ बैसि गेल। चण्डिकाक बहिन कामाख्याक भक्त छल रघुनी। वएह जिया देलन्हि रघुनीकेँ।



चौधरी फेर बजेलक जोगी मकदूमकेँ। ओ हाथमे सरिसो लऽ कऽ मंत्र पढ़ैबला रहए आकि ओकर मुट्ठी बन्दे रहि गेलै।



रघुनीक पएरपर खसल चौधरी।



मुदा चौधरी रघुनीक पाछाँ लागि गेल। ओकर गलती ताकए लागल।



पहुँचि गेल चौधरी गागोरी राजा लग।



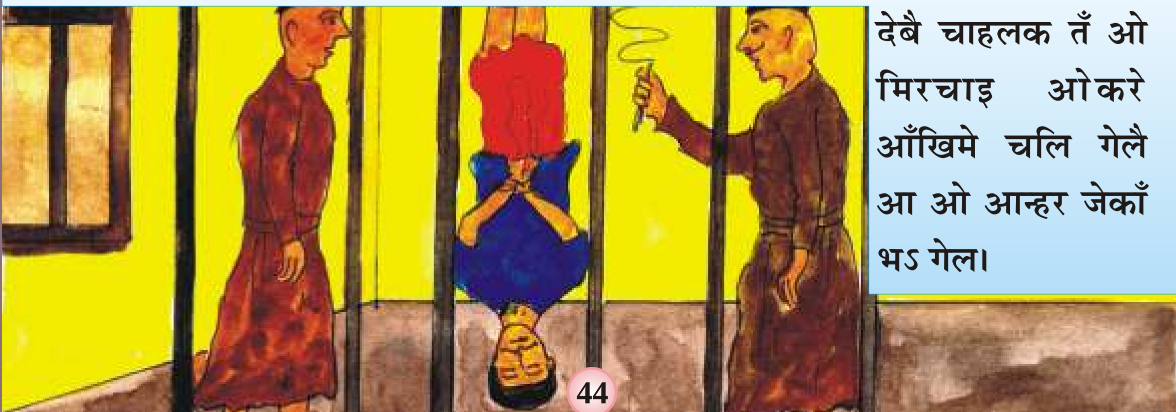
सिपाही आएल। रघुनी नञि भेटलै। ओकर भाए देवदत्त पकड़ा गेल। मुदा जखन सिपाहीक संग देवदत्त केजरीडीह लग छल तँ रघुनीकेँ देखलक देवदत्त। बुझि गेल जे होएत कोनो खेला।



राजा लग आनल गेल देवदत्तकेँ।



मुदा ई की। चोट देवदत्तकेँ नहि मारनिहारकेँ लागै। ओकर गड़ामे जिंजीर कियो देबए चाहलक तँ जिंजीर ओकरे गरदनिमे लागि गेलै। भनसिया देवदत्तक आँखिमे मिरचाइ देबै चाहलक तँ ओ मिरचाइ ओकरे आँखिमे चलि गेलै आ ओ आन्हर जेकाँ भऽ गेल।



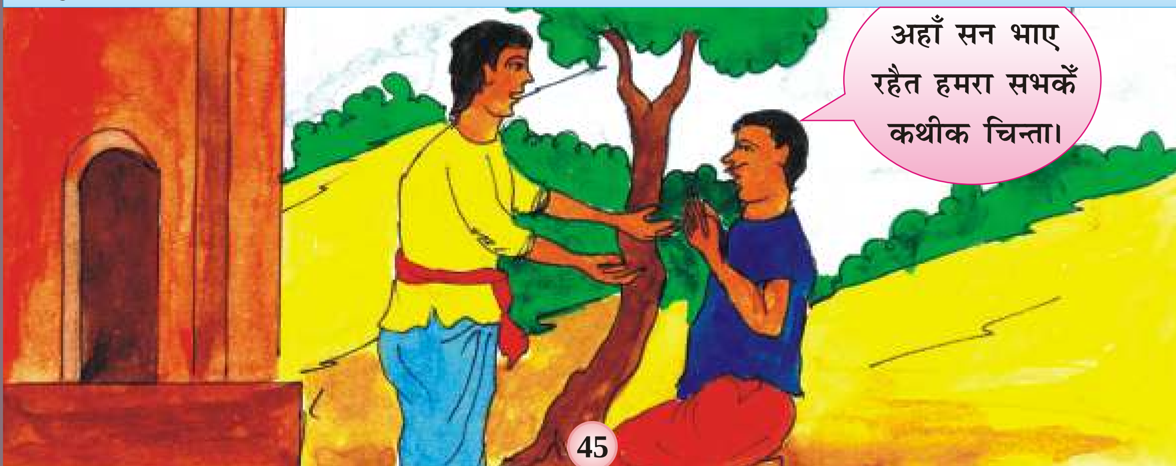
राजा लग सभसँ बूढ़ सेवककेँ पठाओल गेल।



राजा पहुँचलाह जहल। देवदत्तकेँ कहलन्हि, गलती भेल, कहू की करी हमरा सभ। अहाँ जहलसँ जा सकै छी।



रघुनीसँ भेँट भेलै देवदत्तकेँ।



विद्यापतिक आयु अवसान

विद्यापति राजा शिव सिंहक दरबारमे छलाह। शिव सिंहसँ दूर भेलाक बाद ओ भक्तिभावमे लीन भऽ गेलाह।



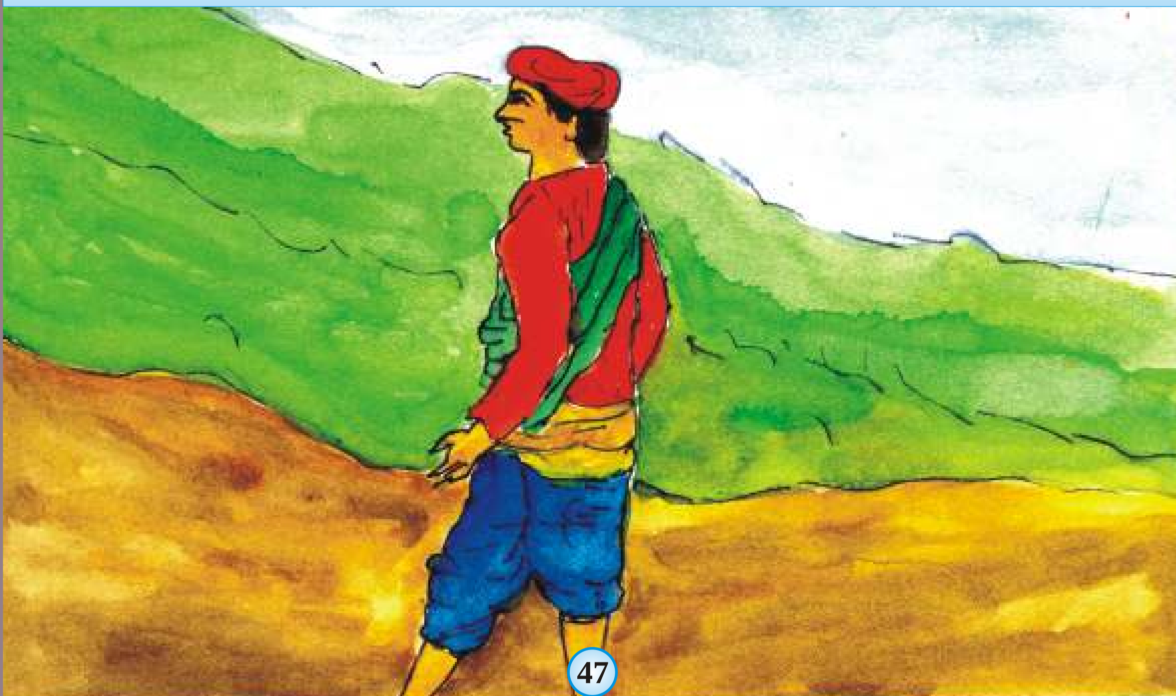
बत्तीस बरख बीति गेल। शिव सिंह सपनामे एलखिन्ह। मैल भेषमे कान्तिहीन काया।



विद्यापति बुझि गेलाह जे हुनकर मृत्यु लग आबि गेल छन्हि। से अपन संतति आ लगक लोककेँ बुझा-सुझा कऽ गंगालाभ करबाक अपन निर्णय सुनेलन्हि।



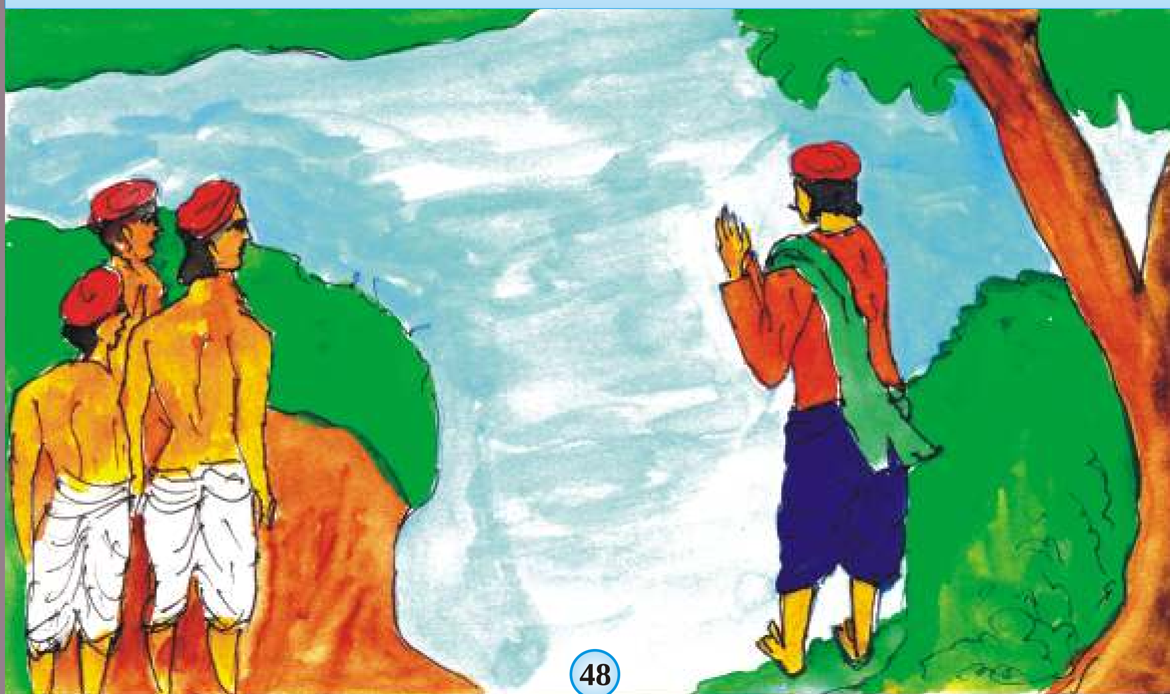
कुलदेवी विश्वेश्वरीकेँ प्रणाम कऽ बिदा भेलाह गंगालाभक लेल। शिवसिंहसँ दूर भेलापर ओ श्रृंगाररस छोड़ि भक्ति काव्यक रचना केनाइ शुरूह कऽ देने रहथि।



गंगासँ दू कोसपर मऊ-बाजितपुरमे ओ ठहरि गेलाह। गंगाक परीक्षण करबाले। साँझ भऽ गेल रहै।



भोर होइत-होइत गंगा मऊ-बाजितपुर आबि गेलीह। लोक सभ चमत्कृत देखैत रहि गेलाह।



गंगातटपर कताक दिन रहि विद्यापति प्राण त्यागलन्हि आ हुनका गंगालाभ भेटलन्हि।



श्रुति प्रकाशनसँ शीघ्र प्रकाश्य

efFkyh fp=kdFkk

- efFkyh fp=kdFkk&uhr dekjh

txnh'k ilkn e.My

- *dFkk&lxg&* xked ftuxh
- *ukVd&* fefFkykd cVh
- *miU;kl&* ekykby xkNd iQy] thou l?k"k] thou ej.k] mRFkku&iru] ftuxhd thr
- fefFkykd lLdkj@fof/&0;ogkj xhr vk xhrukn & ldyu me'k e.My

Xktun Bkdjd jpuk lHk

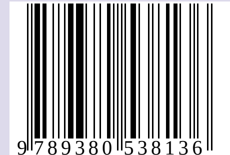
1- *d:{k=ke vUreud* lkr [k.Md ckn xtUn Bkdjd
d:{k=ke vUreud&2 [k.M&8 (icU/&fucU/&lekykpuk&2)
2- *lgL=kck<fud* ckn xtUn Bkdjd nklj miU;kl *lgL=k'kh"kk*
3- *lgL=kkCnhd pkiMijd* ckn xtUn Bkdjd nklj i|&lxg *lgL=kftr*
4- *xYi xPNd* ckn xtUn Bkdjd nklj dFkk&xYi lxg *'kCn'kkL=ke*
5- *ld"k.kd* ckn xtUn Bkdjd nklj ukVd *mYdke[k*
6- *Ro×pkg×p* vk *vl×tkfr* eud ckn xtUn Bkdjd rlj xhr&icU/ *ukjk'klh*
7- uuk&HkVdk vk fd'kkjd yy xtUn Bkdjd rhuVk ukVd *tyknhi*
8- uuk&HkVdk vk fd'kkjd yy xtUn Bkdjd i| lxg *ckÄd cÄkjk*
9- uuk&HkVdk vk fd'kkjd yy xtUn Bkdjd f[kLlk&figkuh lxg *v{kjef"Vdk*

एकैसम शताब्दीक प्रथम दशकक अवसान बेलामे मैथिलीमे एक नवीन शृंखला शुभारंभ भेल जे प्रथमे-प्रथम मैथिली चित्रकथाक प्रकाशनक सूत्रपात श्रुति प्रकाशन कयलक अछि जे एकर आलोकमय भविष्यक सूचक थिक। एकर श्रेय आ प्रेय छनि सुश्री नीतू कुमारीकेँ जे अपन सहज मातृभाषानुरागसँ उत्प्रेरित भऽ अपन कल्पना शक्तिक द्वारा मैथिलीक प्राचीन गौरव-गरिमाक आख्यान एकरा माध्यमे व्याख्यायित करबाक उपक्रम कयलनि अछि। हमर व्यक्तिगत इच्छा अछि जे अभिभावक लोकनि अपना नेना-भुटकाकेँ मैथिली चित्रकथाक माध्यमे मातृभाषानुरागक बीजवपन करथि। एतदर्थ हमर अशेष शुभांषा।-**प्रेमशंकर सिंह**



Jfr idk'ku
dk;ky;% 8@21] U; jktUn uxj] fnYyh&110008
njHkk"k% (011) 25886656µ58 iQDl% (011) 25886657
website: http://www.shruti-publication.com
email: shruti.publication@shruti-publication.coml

ISBN: 978-93-80538-13-6



Rs. 100/- US $80